क्रोध को नियंत्रण करने का प्रयास करें : युवाचार्य महाश्रमण

लाड़नूं: 12 जून,

कषाय के द्वारा जन्म मरण की परंपरा में वृद्धि होती है। पापकर्म के कारण जीव को संसार में चक्कर काटना पड़ता है उसका कारण है क्रोध, मान, माया और लोभ है।

उक्त विचार युवाचार्य महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभागार में व्यक्त किये।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि प्रेक्षाध्यान का सिद्धांत है चित्त को शुद्ध रखना, क्रोध, गुस्से को शांत करना है। युवाचार्य महाश्रमण ने क्रोध के चार प्रकारों को बताते हुए कहा कि एक क्रोध वह होता है जो अपने आप पर होता है। दूसरा क्रोध है जो दूसरों पर गुस्सा आता है। तीसरे प्रकार का क्रोध है जो व्यक्ति के स्वयं पर व दूसरों पर क्रोध करता है। चौथे प्रकार का क्रोध जो न व्यक्ति के स्वयं पर और न दूसरों पर गुस्सा करता है वह अपनी भीतर से प्रकट होने वाला होता है। साधक को यह प्रयास करना चाहिए कि वह गुस्से से मुक्त रहे और क्रोध को शांत करने वाले उपायों को काम में लेने का प्रयास करे।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि समाचार पत्रों में आये दिन घरेलू हिंसा की खबरें पढ़ने को मिलती है। कभी पिता पुत्र की हत्या कर देता है और कभी पति पत्नी की हत्या कर देता है उसका कारण है क्रोध और नशा। उन्होंने क्रोध को भी अपने आप में एक नशा बताया। क्रोध के आवेश में व्यक्ति अहित कार्य कर देता है।

जैन विद्या दीक्षान्त समारोह कल

लाडनूं, 13 जनू।

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्औति संकाय के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित होने वाली जैन विद्या परीक्षाओं का दीक्षांत समारोह 14 जून को आचार्यश्री महाप्रज्ञ युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित होगा। दोपहर 2 बजे आयोजित होने वाले इस समारोह में विज्ञ उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को विज्ञ उपाधि प्रदान की जायेगी। इस समारोह के मुख्य अतिथि बीकानेर के सांसद अर्जुनराम मेघवाल एवं चुरू जिला कलेक्टर औष्णाकांत पाठक होंगे।

संकाय के निदेशक जिनेन्द्र कोठारी के अनुसार 13 जून को प्रातः 9 बजे अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम तीन स्थानों पर रहने वाले विद्यार्थियों, सर्वश्रेष्ठ केन्द्र, आंचलिक संयोजकों एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जायेगा। 13, 14 जून को ही केन्द्र व्यवस्थापकों, आंचलिक संयोजकों एवं विज्ञ उपाधि प्राप्तकर्त्ता विद्यार्थियों की कार्यशाला भी आयोजित होगी। जिनमें मुनिजनों एवं विषय विशेषज्ञों के द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा। उन्होंने बताया कि 13 जून की रात्रि में सांस्औतिक संध्या आयोजित की जायेगी।